विवाह से संबंधित विभिन्न योग

- करूणा शर्मा

1. एक विवाह के योग

सर्वार्थ चिन्तामणि

यदि द्वितीयेश तथा सप्तमेश दोनों ही स्वराशियों में हों तो जातक की एक स्त्री होती है।

जातकभरणम्

1. लग्न से बारहवें या छठे स्थान में सूर्य और चन्द्रमा हों तो उस पुरुष की एक ही स्त्री होती है।

2. सप्तम भाव में सूर्य और मंगल का नवांश हो अथवा सप्तम भाव में बुध और सूर्य हों तो एक ही स्त्री होती है।

मानसागरी

यदि सूर्य और चन्द्रमा छठे या द्वादश भाव में हो तो जातक की एक पत्नी होती है।

सारावली

यदि सप्तम भाव में सूर्य-मंगल का नवांश या गुरु-बुध का योग हो तो जातक को एक ही स्त्री प्राप्त होती है।

जातकतत्त्वम्

1. सप्तमेश और द्वितीयेश यदि नीच राशि में स्थित हों और शुभ ग्रह केन्द्र और त्रिकोण में हों तो एक स्त्री होती है।

2. बुध और बृहस्पति, मंगल या सूर्य के नवांश में स्थित हों तो एक स्त्री होती है।

3. सप्तम भाव में बुध या बृहस्पति का नवांश हो तो एक स्त्री होती है।

2. बहु-विवाह के योग

सर्वार्थ चिन्तामणि

1. यदि सप्तमेश उच्च, वक्रादि गुणों से युक्त हो (अर्थात् दिग्बली, स्थानबली आदि) तो जातक की अनेक स्त्रियां होंगी। सप्तमेश के लग्न में स्थित होने पर भी बहुभार्या योग होता है।

2. यदि लग्नेश अष्टम में या द्वादश में हो तथा सप्तम एवं द्वितीय में पाप ग्रह हों तो जातक की दो भार्या होती हैं। इसी प्रकार द्वितीयेश भी अष्टम-द्वादश (नाश राशि) में बैठा हो तो द्विभार्या योग होता है।

3. यदि सप्तमेश शत्रु राशि एवं नीच राशि का होकर शुभ ग्रह से युक्त हो, सप्तम में पाप ग्रह हो तो जातक का दो विवाह कहना चाहिए।

4. सप्तम भाव का कारक ग्रह पाप ग्रहों से युत हो अथवा नीच राशि, नीच नवांश में होकर पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक के दो विवाह होते हैं।

5. यदि सप्तम में या द्वितीय भाव में पाप ग्रहों की दृष्टि या योग हो, उन स्थानों के स्वामी निर्बल हों तो जातक, दूसरी स्त्री वाला होता है।

6. यदि सप्तम भाव या अष्टम भाव में पाप ग्रह हों एवं बारहवें में मंगल बैठा हो तथा इन भावों पर इनके स्वामियों की दृष्टि न हो तो द्वितीय पत्नी प्राप्त होती है।

7. यदि द्वितीय भाव में बहुत से पाप ग्रह हों या सप्तम भाव में भी यही स्थिति हो, सप्तमेश पाप ग्रहों से युक्त-दृष्ट हो तथैव द्वितीयेश भी पाप ग्रह युत-दृष्ट हो तो इस प्रकार की ग्रह स्थिति में तीन विवाह होते हैं या तीन पत्नियां होती हैं।

8. यदि लग्न द्वितीय तथा सप्तम भावों में पाप ग्रह बैठे हों तथा सप्तमेश नीच राशि में अस्तादि दोषयुक्त हो तो इस योग में जातक की तीन पत्नियां होती हैं (इसमें एक की मृत्यु के बाद दूसरा विवाह सम्भव है)।

9. जब लग्नेश या सप्तमेश नीच राशि, अस्तंगत या क्रूर षष्टयांश में होता

है तब अन्य स्त्री की प्राप्ति होती है।

10. जब सप्तमेश स्थित नवांशेश नीच, मूढ़ या शत्रु नवांश में होकर पाप ग्रहों के मध्य तथा पाप दृष्ट हो तो अन्य पत्नी की प्राप्ति होती है।

11. यदि लग्नेश की अपेक्षा अधिक बली होकर बुध कर्म स्थान (दशम) में बैठा हो, सप्तमेश से तृतीय भाव में चन्द्रमा बैठा हो तो वह जातक बहुत पत्नियों वाला होता है।

12. द्वितीयेश तथा द्वादशेश यदि तृतीय भाव में बैठकर गुरु द्वारा दृष्ट हो अथवा भाग्येष के द्वारा दृष्ट हो तो जातक बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

13. यदि सप्तमेश केन्द्र या त्रिकोण में अपनी स्वराशि, उच्च राशि, मित्र राशि या स्व-नवांश में हो या दशमेश से युक्त हो तो जातक बहुत स्त्रियों वाला होता है।

14. यदि एकादशेश तथा सप्तमेश एक साथ हों अथवा परस्पर दृष्ट हों, बलवान हों या त्रिकोण में हों तो जातक बहुत स्त्रियों से समन्वित होता है।

15. यदि नवमेश सप्तम में हो, सप्तमेश सुख भाव में (चतुर्थ) हो, चतुर्थेश तथा एकादशेश केन्द्र में हों तो भी जातक बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

16. सप्तमेश जिस ग्रह के नवांश में हो, वह ग्रह शुभयुक्त शुभ नवांश में सौम्य ग्रहों से युक्त होकर पारावतांशादिगत होकर बली हो तो इस योग में उत्पन्न जातक सौ स्त्रियों वाला होता है।

17. द्वितीयेश जिस ग्रह की राशि में बैठा हो, उसके षष्टयांश का स्वामी बलवान होकर उस ग्रह के साथ बैठा हो तथा मृद्वंशादि शुभ षष्टयांश में तथा गोपुर भाग में हो तो इस योग में उत्पन्न जातक दो सौ स्त्रियों से युक्त होता है।

18. सप्तम भाव के कारक जिसके नवांश में हो, वह ग्रह भी जिसकी राशि में बैठा हो, वह ग्रह जिस नवांश में हो, वह केन्द्र में षष्टयांश या गोपुरांश में हो तो जातक तीन सौ स्त्रियों से युक्त होता है (उपरोक्त तीनों योगों में भावेशानुसार भी इसी प्रकार का फल कहें)।

19. जब सप्तमेश गोपुरांशक में, दशमेश सप्तम भाव में एवं द्वितीयेश भी गोपुरांशक में हो तो दश स्त्रियां होती हैं।

बृहत् पाराशर होराशास्त्र

1. यदि सप्तमेश अपनी नीच राशि में हो या पाप ग्रह की राशि में पापयुक्त हो, सप्तम स्थान में नपुंसक राशि (बुध व शनि की राशि) का नवांश हो तो जातक की दो पत्नियां होती हैं।

2. सप्तम स्थान में मंगल-शुक्र-शनि हो और लग्नेश अष्टम में हो तो तीन स्त्रियां होती हैं।

3. यदि शुक्र द्विस्वभाव राशि में हो, शुक्र की अधिाष्ठित राशि का स्वामी अपने उच्च में हो, सप्तमेश बली हो, अनेक स्त्रियों वाला होता हैं।

4. लग्नेश लग्न में हो तो जातक दो पत्नी वाला होता है।

5. द्वितीय भाव में लग्नेश होने से जातक अनेक स्त्रियों वाला होता है।

6. तृतीय भाव में लग्नेश होने से दो पत्नी वाला होता है।

7. सप्तमेश द्वितीय भाव में हो तो बहुत पत्नी वाला होता है।

8. अष्टमेष सप्तम भाव में हो तो उसकी दो पत्नी होती हैं।

जातकभरणम्

1. सप्तम भाव में शुक्र का वर्ग हो, उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो कई स्त्रियां होती हैं। यदि सप्तम भाव में बुध का वर्ग (राशि, नवांश आदि) हो और शुक्र से दृष्ट हो तो भी अनेक स्त्री वाला होता है।

2. लग्नेश, लग्न में जातक दो पत्नी वाला होता है।

3. लग्नेश, द्वितीय भाव में जातक अधिक स्त्री वाला होता है।

4. लग्नेश, तृतीय भाव में जातक दो पत्नी वाला होता है।

5. लग्नेश, एकादश भाव में जातक बहुत पत्नी वाला होता है।

6. द्वितीयेश, द्वितीय भाव में जातक दो या अधिक पत्नी वाला होता है।

7. द्वितीयेश, दशम भाव में जातक बहुत स्त्री वाला होता है।

8. सप्तमेश, द्वितीय भाव में जातक बहुत स्त्री वाला होता है।

9. अष्टमेश सप्तम भाव में हो, जातक दो पत्नी वाला होता है।

सारावली

सप्तम भाव में चन्द्रमा व शुक्र का वर्गाधिक्य हो या चन्द्रमा-शुक्र सप्तम में हों या सप्तम भाव चन्द्रमा-शुक्र से दृष्ट हो तो जातक की प्रायः अधिक

स्त्रियां होती हैं। यदि शुक्र का वर्ग, योग, दृष्टि सप्तम भाव में हो तो विशेष करके अधिक स्त्री होती है।

जातक पारिजात

यदि सप्तम भाव में पाप ग्रह और शुभ ग्रह दोनों हों तो कन्या का दोबारा विवाह होता है।

जातकतत्त्वम्

1. लग्नेश लग्नस्थ हो तो जातक की दो पत्नियां होती हैं।

2. अष्टमेश यदि लग्नगत हो अथवा सप्तमस्थ हो तो जातक की दो पत्नियां होती हैं।

3. लग्नेश यदि षष्ठभावस्थ हो तो जातक की दो पत्नियां होती हैं।

4. द्वितीयेश यदि षष्ठस्थ हो और सप्तम भाव में पाप ग्रह हों तो जातक दो पत्नियों वाला होता है।

5. सप्तमेश अपनी शत्रुराशि अथवा नीच राशि में शुभ ग्रहों से युत हो और सप्तम भाव पापाक्रान्त हो तो जातक दो पत्नियों से युक्त होता है।

6. सप्तम भाव कारक (शुक्र) पाप ग्रह से युत अथवा नीच, शत्रु राशि में या अस्त हो तो जातक दो पत्नियों वाला होता है।

7. सप्तम भाव पापान्वित हो, जातक की दो पत्नियां होती हैं।

8. धन भाव पापयुक्त हो तथा द्वितीयेश भी पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक की तीन पत्नियां होती हैं।

9. सप्तम भाव में पाप ग्रह स्थित हों और सप्तमेश पाप ग्रहों से देखा जाता हो तो जातक की तीन पत्नियां होती हैं।

10. लग्न, द्वितीय और सप्तम भाव में पाप ग्रह हों तथा सप्तमेश नीच, शत्रु राशिगत हो अथवा अस्त हो तो जातक की तीन पत्नियां होती हैं।

11. धनस्थान में पाप ग्रहों की बहुलता हो, सप्तमेश भी उसी स्थिति में हो अर्थात् पापान्वित हो तथा छठे भाव में केतु स्थित हो तो जातक की तीन स्त्रियां होती हैं।

12. सप्तम भाव में मंगल, शनि और शुक्र तथा लग्नेश अष्टमस्थ हो तो जातक की तीन पत्नियां होती हैं।

13. लग्न उच्चस्थ ग्रह से युक्त हो अथवा लग्नेश उच्चराशिगत हो तो जातक की अनेक पत्नियां होती हैं।

14. चन्द्रमा और शुक्र यदि बली ग्रहों से दृष्ट हो तो तीन से अधिक पत्नी जातक को प्राप्त होती हैं।

15. यदि सप्तम भाव बली शुक्र से दृष्ट हो तो जातक अनेक पत्नियों से युक्त होता है।

16. लग्न, द्वितीय और षष्ठेश यदि संयुक्त होकर सप्तम भावस्थ हों तो जातक अनेक पत्नियों वाला होता है।

17. सप्तमेज़्ग्रानि यदि पापग्रहों से युत हो तो जातक अनेक पत्नियों से युक्त होता है।

18. सप्तमेश से तृतीय भाव में यदि बली चन्द्रमा स्थित हो तो जातक अनेक स्त्रियों का स्वामी होता है।

19. द्वितीयेश और द्वादशेश यदि तृतीय भाव में बृहस्पति अथवा नवमेश से दृष्ट हो तो जातक अनेक पत्नियों से युक्त होता है।

20. सप्तमेश यदि शुभवर्गस्थ होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो और उसे दशमेश की दृष्टि भी प्राप्त हो तो जातक की अनेक स्त्रियां होती हैं।

21. सप्तमेश और एकादशेश संयुक्त होकर सप्तम भावस्थ हों और बलान्वित हों तो जातक अनेक स्त्रियों से युक्त होता है।

फलदीपिका

1. यदि सप्तम भाव में नपुंसक ग्रह स्थित हों और एकादश भाव में दो ग्रह स्थित हों तो जातक की दो पत्नियां होती हैं।

2. यदि शुक्र व सप्तमेश दोनों द्विस्वभाव राशि में अथवा द्विस्वभाव राशि के नवांश में स्थित हों तो भी जातक की दो पत्नियां होती हैं।

3. शीघ्र विवाह के योग

सर्वार्थ चिन्तामणि

1. यदि लग्नेश तथा सप्तमेश एक ही साथ लग्न में स्थित हों तो जातक

का शीघ्र विवाह (बाल्यकाल) होता है। यदि लग्न तथा सप्तम भावों से शुभ ग्रह समीप राशियों में हों तो भी विवाह शीघ्र हो जाता है।

2. यदि लग्न, द्वितीय तथा सप्तम भावों में शुभ ग्रह बैठे हों, शुभ ग्रहों के वर्ग हों, उन ग्रहों के स्वामी भी शुभयुक्त-दृष्ट हों तो भी जातक का शीघ्र विवाह होता है।

3. यदि सप्तमेश, द्वितीयेश तथा लग्नेश बलवान हों, पारावतांश तथा मृदु षष्टयांश में हो तो बाल्यकाल में ही विवाह होता है।

बृहत् पाराशर होरा शास्त्र

1. सप्तमेश शुभ ग्रह की राशि में हो, शुक्र अपने उच्च या गृह में हो तो $5^{वें}$ या $9^{वें}$ वर्ष में विवाह योग है।

2. सप्तम भाव में सूर्य हो और सप्तमेश शुक्र के साथ स्थित हो तो प्रायः $7^{वें}$ या $11^{वें}$ वर्ष में विवाह होता है।

3. शुक्र द्वितीय भाव में और सप्तमेश एकादश भाव में हो तो $10^{वें}$ या $16^{वें}$ वर्ष में विवाह होता है।

4. शुक्र लग्न से केन्द्र में हो, लग्नेश शनि की राशि में हो तो $11^{वें}$ वर्ष में विवाह होता है।

5. लग्न से केन्द्र में शुक्र और शुक्र से सप्तम में शनि हो तो $12^{वें}$ या $19^{वें}$ वर्ष में विवाह होता है।

6. चन्द्र से सप्तम में शुक्र और शुक्र से सप्तम में शनि हो तो $18^{वें}$ वर्ष में विवाह होता है।

7. द्वितीयेश एकादश भाव में और लग्नेश दशम भाव में हो तो $15^{वें}$ वर्ष में विवाह होता है।

8. द्वितीयेश एकादश भाव में और लाभेश द्वितीय भाव में हो तो $13^{वें}$ वर्ष में विवाह होता है।

9. यदि शुक्र से सप्तम चन्द्रमा और चन्द्र से सप्तम में बुध, अष्टमेश पंचम भाव में हो तो उस जातक का प्रथम विवाह $10^{वें}$ वर्ष में, दूसरा विवाह $22^{वें}$ वर्ष में तथा तीसरा विवाह $33^{वें}$ वर्ष में होता है।

जातकभरणम्

1. सप्तम भाव में यदि शुभ ग्रह का नवांश, द्वादशांश और द्रेष्कोण हो तो इस योग में जन्म लेने वाले जातक का शीघ्र विवाह होता है।

2. सप्तम भाव में शुभ राशि हो, वह शुभ ग्रह से युत और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो निश्चय ही शीघ्र विवाह होता है।

जातकतत्त्वम्

1. सप्तमेश के सन्निकट (एक राशि अथवा द्वि-द्वादश राशियों में) लग्नेश स्थित हो, जातक का विवाह बाल्यावस्था में हो जाता है।

2. लग्न अथवा सप्तम भाव के निकट भावों में यदि शुभ ग्रह स्थित हों तो शीघ्र विवाह हो जाता है।

3. सप्तमेश यदि पारावतादि अंशों में बली हो अथवा बलवान् सप्तमेश धनभावस्थ हो तो जातक का शीघ्र विवाह होता है।

4. विवाह में विलम्ब के योग

बृहत पाराशर होरा शास्त्र

1. अष्टम भाव से सप्तम में शुक्र और अष्टमेष मंगल से युक्त हो तो $22^{वें}$ या $27^{वें}$ वर्ष में विवाह होता है।

2. लग्नेश यदि सप्तमेश के नवमांश में हो और सप्तमेश द्वादश भावस्थ हो तो $23^{वें}$ या $26^{वें}$ वर्ष में विवाह होता है।

3. यदि अष्टमेश सप्तम भाव में लग्न के नवमांश में शुक्र से युत हो तो $25^{वें}$ या $33^{वें}$ वर्ष में विवाह होता है।

4. भाग्य भाव से, नवम में शुक्र हो उन दोनों में से किसी एक में राहु हो तो $31^{वें}$ या $33^{वें}$ वर्ष में विवाह होता है।

5. नवम भाव से सप्तम में शुक्र हो और शुक्र से सप्तम में सप्तमेश हो तो $30^{वें}$ या $27^{वें}$ वर्ष में विवाह होता है।

जातकभरणम्

1. सप्तम भाव में पाप राशि हो, वह पाप ग्रह से युत और पाप ग्रह दृष्ट हो तो विलम्ब से स्त्री की प्राप्ति होती है।

2. सप्तम भाव में बुध-शुक्र हों और ग्रह दृष्ट हों तो अधिक अवस्था में स्त्री का लाभ होता है।

5. विधुर योग (पत्नी का अरिष्ट)

सर्वार्थ चिन्तामणि

1. यदि पंचमेश सप्तम भाव में हो और सप्तमेश पाप ग्रहों से युत हो, शुक्र निर्बल हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु गर्भावस्था या प्रसूतावस्था में हो जाती है।

2. यदि शुक्र नीच राशि का हो और चन्द्रमा नीच राशिस्थ हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु जल में डूबने से हो जाती है।

3. यदि सप्तमेश पाप द्रेष्काण, भुजंग द्रेष्कोण में हो तो पत्नी की मृत्यु फांसी लगाकर मरने से होती है अथवा सप्तमेश राहु तथा मान्दि के साथ हो तो पत्नी की मृत्यु विषभक्षण से होती है।

4. यदि सप्तमेश शनि व मंगल के साथ हो अथवा क्रूर षष्टयांश में हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु होती है।

5. द्वितीयेश तथा सप्तम स्थान के कारक के नवांश स्वामी से भी फल कहना चाहिए। यदि सप्तम भाव तथा सप्तमेश पाप ग्रहों के मध्य हो तो कलत्रहा योग अर्थात् पत्नी का निधन होता है।

6. लग्नेश, सप्तमेश से कम बली हो तथा पाप ग्रहों के साथ अष्टम-द्वादश में बैठा हो अथवा लग्नेश अवरोही (नीचाभिलाशी) हो तो जातक की स्त्री का मरण होता है।

बृहत पाराशर होरा शास्त्र

1. सप्तमेश नीच का हो और शुक्र षष्ठ-द्वादश में हो तो विवाह से $18^{वें}$ या $33^{वें}$ वर्ष में स्त्री का नाश होता है।

2. सप्तमेश अष्टम में और द्वादशेश सप्तम में हो तो $19^{वें}$ वर्ष में स्त्री का

नाश होता है।

3. द्वितीय भाव में राहु, सप्तम में मंगल हो तो विवाह के दिन या तीसरे दिन सांप के काटने से स्त्री का मरण होता है।

4. अष्टम भाव में शुक्र हो और अष्टमेश शनि की राशि में हो तो 12वें या 19वें वर्ष में स्त्री का नाश होता है।

5. लग्नेश नीच राशि में और द्वितीयेश अष्टम में हो तो 13वें वर्ष में स्त्री का मरण होता है।

6. षष्ठ भाव में मंगल, सप्तम में राहु, अष्टम में शनि हो तो जातक की स्त्री मर जाती है।

7. लग्नेश पापी ग्रह होकर सप्तम भाव में हो तो स्त्री का नाश करता है।

जातकभरणम्

1. सप्तम भाव में मंगल हो और उस पर शनि की दृष्टि हो, कोई शुभ प्रभाव नहीं हो तो स्त्री प्राप्त होकर भी मर जाती है।

2. सप्तम भाव में राहु हो उस पर दो पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो उसे स्त्री योग नहीं होता। कदाचित् होता भी है तो शीघ्र मर जाती है।

3. षष्ठ भाव में मंगल, सप्तम में राहु, अष्टम में शनि हो तो जातक की स्त्री जीवित नहीं रहती है।

मानसागरी

1. यदि पुरुष की कुंडली में मंगल की स्थिति लग्न, व्यय, चतुर्थ, सप्तम अथवा अष्टम में हो तो स्त्री की शीघ्र मृत्यु होती है।

2. यदि चन्द्रमा से अथवा लग्न से सप्तम या अष्टम स्थान में पाप ग्रह हों तो जातक की स्त्री कुछ ही दिनों में मर जाती है।

3. षष्ठ भाव में मंगल, सप्तम में राहु, अष्टम में शनि हो तो जातक की स्त्री जीवित नहीं रहती है।

सारावली

1. लग्न व चन्द्रमा में से जो बली हो, उससे सप्तम भाव में पाप ग्रह हों तो जातक की स्त्री का नाश होता है।

जातकतत्त्वम

1. सूर्य लग्न में और शनि सप्तम भाव में स्थित हो तो पत्नी का मरण होता है।

2. अष्टम में शनि, षष्ठ में मंगल तथा सप्तम में राहु पत्नी वियोग देता है।

3. लग्न में नीचस्थ ग्रह स्थित हो अथवा लग्नेश नीच राशिगत हो, पत्नी की मृत्यु होती है।

4. लग्न में कन्या राशिगत सूर्य हो और शनि मीनस्थ हो।

5. चतुर्थ भाव में नीच का शुक्र हो अथवा चन्द्रमा हो।

6. सप्तमेश क्रूर षष्टयांश में स्थित हो।

7. पापाक्रान्त पाप ग्रह निद्रावस्था में सप्तम भाव में स्थित हो।

8. प्रकाशित भाग में स्थित सूर्य सप्तम भाव में हो।

9. नेत्रपाणि अवस्था में मंगल सप्तम भाव में स्थित हो।

फलदीपिका

1. शुक्र यदि पाप ग्रहों के मध्य में हो या शुक्र से चतुर्थ-अष्टम-द्वादश पाप ग्रह हों या शुक्र पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो, जिस जातक की कुंडली में यह तीनों योग जितने अधिक होंगे, उतने ही दुष्प्रभाववश उसकी पत्नी की मृत्यु का कारण बनेंगे।

2. सप्तमेश पंचम भाव में स्त्री की मृत्यु देता है। यदि पंचमेश या अष्टमेश सप्तम में तो भी पत्नी का नाश करता है।

3. यदि वृश्चिक राशि का शुक्र सप्तम में हो या वृषभ राशि का बुध सप्तम में हो या मकर राशि का बृहस्पति सप्तम में हो, इनमें से किसी का भी योग जातक की कुंडली में होने से पत्नी की मृत्यु हो जाती है।

4. यदि सप्तम भाव या सप्तमेश पाप ग्रह से युत या दृष्ट हो या पाप ग्रहों के बीच में हो या सप्तमेश नीच राशि या शत्रु राशि में हो या अस्त हो तो स्त्री का मरण होता है।

5. यदि द्वितीय या सप्तम स्थान अशुभ ग्रहों से युत या वीक्षित हों तो भार्या का नाश होता है।

6. यदि अशुभ ग्रह अपनी नीच या शत्रु राशि में द्वितीय-सप्तम और

अष्टम में जातक की कुंडली में हों तो स्त्री की मृत्यु होती है।

6. वैधव्य योग (पति का अरिष्ट)

मानसागरी

1. यदि स्त्री की कुंडली में मंगल की स्थिति लग्न, व्यय, चतुर्थ, सप्तम अथवा अष्टम में हो तो पति की शीघ्र मृत्यु होती है।

जातक पारिजात

1. यदि सप्तम भाव पाप ग्रहों से युक्त हो (तीन या तीन से अधिक क्रूर ग्रह सप्तमस्थ हों) तो विधवा योग होता है।

2. यदि शनि सप्तम भाव में पाप राशि में हो तो विधवा योग होगा।

3. चाहे सब शुभ ग्रह अपनी-अपनी उच्च राशि में हों किन्तु यदि पाप राशि में अष्टम स्थान में पाप ग्रह हों और पापदृष्ट हों तो स्त्री विधवा होती है।

अष्टमेश जिस नवांश में है, उसका स्वामी पाप ग्रह हो तो निश्चय विधवा होती है।

4. लग्न से सप्तम भाव में सब पाप ग्रह हों तो विधवा योग है।

5. दो ग्रह सप्तम में हो तो मनस्विनी और कामासक्त मन रहे। वह स्त्री विधवा हो।

यदि तीन पाप ग्रह सप्तम में हो तो कुछ समय के बाद विधवा होती है।

6. क्रूर ग्रह अष्टम भाव में हो तो वह क्रूर ग्रह जिसके नवांश में हो उस ग्रह की नैसर्गिक दशा में स्त्री विधवा होती है।

फलदीपिका

1. पत्नी की कुंडली में सप्तम या अष्टम अथवा दोनों भाव अशुभ ग्रहों से युत या वीक्षित हो तो पति के लिए अनिष्ट होता है।

2. यदि अशुभ ग्रह अपनी नीच या शत्रु राशि में द्वितीय-सप्तम और अष्टम में स्त्री की कुंडली में हों तो पति की मृत्यु होती है।

7. पति-पत्नी दोनों की एकसाथ मृत्यु

जातक पारिजात

1. यदि अष्टम भाव का सम बल हो अर्थात् शुभ ग्रह, पाप ग्रह बराबर देखें या शुभ ग्रह और पाप ग्रह दोनों हों तो ज्योतिष शास्त्र के वेत्ताओं ने कहा है कि पति-पत्नी की मृत्यु एक ही काल में होती है।

2. यदि सप्तमेश और लग्नेश एक स्थान में हों या सप्तमेश लग्न में हो और लग्नेश सप्तम में शुभ ग्रह के साथ हो तो दोनों पति-पत्नी की मृत्यु एक साथ होती है।

*****